2016

TITLE OF THE PROJECT :-

राजगीर एवं नालंदा की भौगोलिक स्थिति का दर्शन

Bachelor of Geography (Hons)

Project Report Submitted to :-

GULAB CHAND PRASAD AGRAWAL COLLEGE

SADMA, CHHATTARPUR

(PALAMU)

Guide :-

Signature.......

Name- Prof. Jitendra Kumar

Dept. of Geog. (H.O.D.)

Student:-

Signature.......

Name VIPUL KUMAR

Roll. No. 14 BA 050304

Regd. No. NPU/1 93/16

TO WHOM IT MAY CONCERN

This is to certify that Mr. VIPUL KUMAR.......... is a student of part 3rd in Geography of G.C.P.A. College, Sadma, Chhattarpur, (Palamau) under Nilamber Pitamber University has successfully participated in geographical tour course on dated 26-05-2019.

During this period his/her conduct was good. I wish him every success in his/her life.

Head
Dept. of Geography.

A JOURNEY FOR NALANDA, RAJGIR, BODHGAYA

नालन्दा, राजगीर, बोद्धगया की यात्रा

(शैक्षणिक भ्रमण वृतान्त)

तय समयानुसार दिनांक 26 मई 2019 दिन रविवार को पु0 07:00 बजे शैक्षणिक भ्रमण हेतू हमलोग नीलाम्बर – पिताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर के सम्बद्ध गुलाबचन्द प्रसाद अग्रवाल कॉलेज सड़मा, छतरपुर, पलामू के स्नातक तृतीय वर्ष के छात्र / छात्राएँ महाविद्यालय के प्रांगन से एक बस के द्वारा नालन्दा, राजगीर, बोद्धगया के सर्वेक्षण के लिए चले। जिसमें कुल छात्र एवं छात्राएँ सामिल थें।

हमलोग महाविद्यालय के प्रांगन से बोद्धगया, राजगीर एवं नालन्दा पहुँचे। वहाँ पर हमलोगों ने राजगीर गर्म कुण्ड, मनोरम दृश्य का अवलोकन करते हुए भ्रमण किये। उसके बाद लौटने के क्रम में बोद्व गया क्षेत्र में विचरन किये। वहाँ का दृश्य बड़ा ही मनोहारी था।

ACKNOWLEDGEMENT

मैं अपना आभार उन सबों को प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हमारी भौगोलिक शैक्षणिक शाख नालन्दा, राजगीर एवं बोद्धगया के अध्ययण एवं अवलोकन कराने में हमारी सहायता की।

सर्व प्रथम हम अपने महाविद्यालय के प्रो0 जितेन्द्र कुमार को देना चाहता हूँ। जिन्होने सारे विघ्न – बाधाओं को नजर अंदाज करते हुए हमारे आवश्यकता के अनुसार कार्य का सम्पादन किया।

हम सब स्नातक तृतीय वर्ष के सहपाठी गन एक दुसरे को भपुर सहायता किये। साथ ही साथ समस्त सहपाठियों को प्रेम – पूर्वक सहयोगात्मक रवैया मुझे लगातार प्रेरण प्रदान करता रहेगा।

अतः मैं उन सभी सहपाठियों एवं शिक्षकगण का हार्दिक अभारी हूँ जो हमारे इस भौगोलिक सर्वेक्षण को पूर्ण कराने में काफी सहयोग किया।

धन्यवाद Vipul Kunal
Roll No- 17BA0505304

वर्ग – स्नातक तृतीय वर्ष

विषय – भूगोल

PREFACE (प्रस्तावना)

हमारी पृथ्वी जिस पर हम निवास करते हैं, विविधताओं से परिपूर्ण हैं। जिसमें भौगोलिक विविधता, ऐतिहासिक विविधता, सांस्कृतिक विविधता, आर्थिक विविधता आदि महत्वपूर्ण हैं। परन्तु यह सर्वमान्य तय है कि भौगोलिक विविधता ही सारी विविधताओं को जन्म देती है। भौगोलिक विविताओ का अध्यण भुगोल विषय में किया जाता है। इस तरह भारत के सभी विश्व विद्यालय मे भुगोल विषय में स्नातक पाठ्यक्रम एक विशेष क्षेत्र का भौगोलिक सवेक्षण करते हैं, जिसमें मुख्यतः भौगोलिक विविधता का मानव जीवन के संबंध एवं प्रभाव का सवेक्षण होता है। प्रतिवेदन प्रस्तुत करना अनिवार्य है। जिसका पुर्णांक 50 का है। इसी उपलक्ष्य में गुलाबचन्द प्रसाद अग्रवाल सड़मा, छतरपुर, पलामू के स्नातक तृतीय वर्ष के भुगोल विभाग ने भौगोलिक सर्वेक्षण करने का निर्णय लिया गया। जिसमें हमे नालन्दा, राजगीर एवं बोद्धगया के आस – पास के क्षेत्रों के भौगोलिक विविधाताओ का अध्ययन एवं सर्वेक्षण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां के वनस्पतियों के विविधता, जैविक विविधता, मानव जीवन के ऐतिहासिक विशेषताएँ, जनसंख्या आदि का सभी मुख्य भौगोलिक विशेषताओं के बारे में व्याख्यात्मक वर्णन करने का प्रयास किया गया। यह प्रतिवेदन मेरे श्रमशक्ति शक्ति का परिचालक व भूगोल के अनुयायी छात्रों का ज्ञानवर्धन करने में उपयोगी है।

परिचय

राजगीर , बिहार प्रांत में नालंदा जिले में स्थित एक शहर एवं अधिसूचीत क्षेत्र है। यह कभी मगध साम्राज्य की राजधानी हुआ करती थी। जिससे बाद में मौर्य साम्राज्य का उदय हुआ।

राजगृह का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है । वसुमतिपुर वृहद्रथपुर, गिरिब्रज और कुशग्रपुर के नाम से भी प्रसिद्ध रहे राजगृह को आजकल राजगीर के नाम से जाना जाता है। पौराणिक साहित्य के अनुसार राजगीर बह्मा की पवित्र यज्ञ भूमि संस्कृति और वैभव का केन्द्र तथा जैन तीर्थकर महावीर और भगवान बुद्ध की साधनाभूमि रहा है। इसका जिक्र ऋगवेद, अथर्ववेद, तैतिरीय पुराण, वायु पुराण , महाभारत , बाल्मीकि रामायण आदि में आता है जैनग्रंथ विविध तीर्थकल्प के अनुसार राजगीर जरासंध , श्रेणक, बिम्बसार, कनिक आदि प्रसिद्ध शासको का निवास स्थान था। जरासंध ने यहीं श्रीकृष्ण को हराकर मथुरा से द्वारिका जाने को विवश किया था।

पटना से 100किमी उतर में पहाडियों और घने जंगलों के बीच बसा राजगीर न सिर्फ एक प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थस्थल है बल्कि एक खुबसरत हेल्थ रेसॉर्ट के रूप में भी लोकप्रिय है। यहाँ हिन्दु जैन और बौद्ध तीनों धर्मो के धार्मिक स्थल है। खासकर बौद्ध धर्म से इसका बहुत प्राचीन संबंध है। बुद्ध न सिर्फ कठ वर्षो तक यहाँ ठहने थे बल्कि कई महत्वपूर्ण उपदेश भी यहाँ की धरती पर दिये थे। बुद्ध के उपदेशों को यहीं लिपिबद्ध किया गया था और पहली बौद्ध भी यही हुई थी।

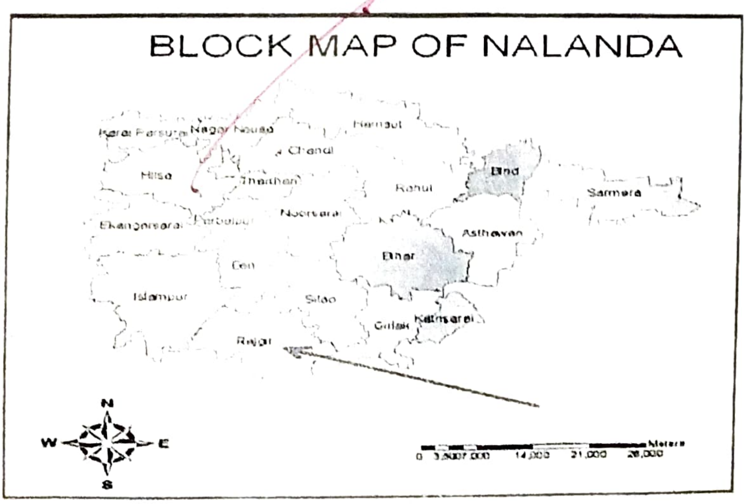

अनुक्रम

1. मौसम

2. दर्शनीक स्थल

2.1 प्राचीन बौद्ध पर्यटक स्थल

2.1.1 गृद्धकूट पर्वत

2.1.2 वेणुवन

2.2 गर्म जल के झरने

2.3 स्वर्ण भंडार

2.4 जैन मंदिर

3. राजगीर का मलमास मेला

3.1 जीवकर्म

3.2 तपोधर्म

3.3 सप्तपर्णी गुफा

3.4 हिन्दु स्थल

3.4.1 जरासंध का अखाड़ा

3.4.2 लक्ष्मी नारायण मंदिर

3.5 अन्य स्थान

3.5.1 बिम्बिसार कारागार

4. राजगीर कैस पहूँचें।

5. सन्दर्भ

6. बाहरी कड़ियाँ

Coordinates 25 03'N 85 42°E

मौसम:-

तापमान अधिकतम 40° से0 , न्युनतम 20° से0 जाडो में 28° से0 , न्युनतम 6° से0 वर्षा 1860 मिमी (मध्य-जून से सितंबर) सबसे उपयुक्त अक्तूबर से अप्रैल।

दर्शनिक स्थल :- प्राचीन बौद्ध पर्यटक स्थल।

गृद्धकुट पर्वत:-

इस पर्वत पर बुद्ध ने कई महत्वपूर्ण उपदेश दिये थ। जापान के बुद्ध संघ ने इसकी चोटी पर एक विशाल शान्ति स्तुप का निर्माण करवाया है जो आजकल पर्यटको के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। स्तुप के चारों कोणों पर बुद्ध की चार प्रतिमाएं स्थपित है। स्तुप तक पहुंचने के लिए पहले पैदल चढ़ाई करनी पड एक रज्जू मार्ग भी बनाया गया है जो यात्रा को और भी रोमांचक बना देता है।

वेणूवन:-

बाँसो के इस रमणीक वन में बसे वेणुवन बिहार को बिम्बिसार ने भगवान बुद्ध के रहने के लिए बनवाया था।

गर्म जल के झरने :-

वैभव पर्वत की सीढियाँ। पर मंदिरो के बीच गर्म जल के कई झरने है। जहाँ सप्तकर्णी गुफाओं से जल आता है। इन झरनों के पानी में कई चिकित्सकीय गुण होने के प्रमाण मिले है। पुरूषों और महिलाओं के नाहने के लिए 22 कुन्ड बनाए गये हैं। इनमें ब्रम्हाकुन्ड, का पानी सबसे गर्म (45डिग्री से0) होता है।

स्वर्ण भंडार:-

यह स्थान प्रचीन काल में जरासंध का सोने का खजाना था। कहा जाता है कि अब भी इस पर्वत की गुफा के अंदर बतुल मात्रा में सोना छुपा है और पत्थ के दरवाजे पर उसे खोलने का रहस्य भी किसी गुप्ता भाषा में खुदा हुआ ह। वह किसी और भाषा में नही बल्कि शंख लिपि है। वह लिपि बिंदुसार के शासन काल में चला करती थी।

जैन मंदिर :-

पहाड़ों की कंदराओं के बीच बने 26 जैन मंदिरो को आप दूर से देख सकते है। पर वहाँ पहुंचने का मार्ग अत्यंत दुर्गम है। लेकिन अगर कोई प्रशिक्षित गाइड साथ मे हो तो यह एक यादगार और बहुत रोमांचक यात्रा साबित हो सकती है।

राजगीर का मलमास मेला :-

राजगीर की पहचान मेलों के नगर के रूप में भी है। इनमें सबसे प्रसिद्ध मकर और मलमास मेले के है। शास्त्रों में मलमास तेरहवें मास के रूप में वर्णित है। सनातन मत की ज्योतिषीय गणनाके अनुसार तीन वर्ष में एक वर्ष 366 दिन का होता है धार्मिक मान्यता है कि इस अतिरिक्त एक महीने के मलमास या अतिरिक्त मास कहा जाता है।

ऐतरेय ब्रम्हाण के अनुसार यह मास उपवित्र माना गया है अरैर अग्नि पुराण के अनुसार इस अवधि में मूर्ति पूजा प्रतिष्ठा यज्ञदान, व्रत, वेदपाठ, उपनयन, नामकरण आदि वर्जित है। लेकिन इस अवधि में राजगीर सर्वाधिक पवित्र माना जाता है अग्नि पुराण एवं वायु पुराण आदि के अनुसार इस मलामास अवधि में सभी देवी देवता यहा। आकर वास करते है। राजगीर के मुख्य ब्रम्हाकुण्ड के बारे में पौराणिक मान्यता है कि इसे ब्रम्हाजी ने प्रकट किया था और मलमास के इस कुण्ड में स्नान का विशेष फल है।

मलमास मेले का ग्रामीण स्वरूप :-

राजगीर के मलमास मेले को नालंदा ही नही बल्कि आसपास के जिलों में आयोजित मेलों में सबसे बड़ा कहा जा सकता है। इस मेले का लोग पूरे साल इंताजार करते है। कुछ साल पहले तक यह मेला ठेठ देहाती हुआ करता था पर अब मेले में तीर्थयात्रियों के मनोरंजन के लिए तरह तरह के झूले, सर्कस आदि भी लगे होते हैं। युवाओं की सबसे ज्यादा भीड थियेटर में होती है जहाँ। नर्तकियाँ अपनी मनमोहक अदाओं से दर्शकों का मनोरंजन करती है।

जीवकर्म :-

बुद्ध के समय प्रसिद्ध वैद्य जीवक राजगीर से थे। उन्होंने बुद्ध के नाम एक आश्रम समर्पीत किया जिसे कहा जाता है।

तपोधर्म :-

तपोधर्म आश्रम गर्म चश्मों के स्थान पर स्थित है। आज वहाँ एक हिन्दु मन्दिर का निर्माण किया गया है जिसे लक्ष्मी नारायण का नाम दिया गया है। पूर्वकाल में तपोधर्म के स्थल पर एक बौध आश्रम और गर्म चश्में थें । राजा बिम्बिसार यहाँ पर कभी कभार स्नान किया करते थें ।

सप्तपर्णी गुफा :-

सप्तपर्णी गुफा के स्थल पर पहला बौध परिषत का गठन हुआ था जिसका नेतृत्व महा कस्साप ने किया था। बुद्ध भी कभी कभार वहाँ रहे थें। और यह अतिथि संयासियों के ठहरने के काम में आता था।

हिन्दु स्थल :-

जरासंध का अखाड़ा

हिन्दु मान्यता के अनुसार महान परन्तु दृष्ट योद्धा जिसके बार बार मथुरा पर हमले से श्री कृष्ण तंग आकर मथुरा वासियों को द्वार्का भेजना पड़ा इसी स्थान पर हर दिन सैन्य कलाओं का अभियास करता था।

लक्ष्मी नारायण मंदिर :-

गुलाबी रंग वाली हिन्दु लक्ष्मी नारायण मंदिर अपने दामन में प्रचीन गर्म चश्में समाए हुए है। यह मंदिर अपने नाम के अनुसार विष्णु भगवान और उनकी पत्नी लक्ष्मी को समर्पित है।

वास्तवीक रूप में जल में एक डुपकी की गर्म चश्में को अनुभव करने का श्रोत था परन्तु अब एक उच्च स्तरीय चश्में को काम में लाया गया है जो कई आधुनिक पाठ्यों से होकर आता है जो एक हॉल की दीवारों से जुड़े है

जहाँ लोग बैठकर अपने उपर से जल के जाने का आनंद ले सकते हैं। आश्चर्य की बात हेथ्क इस गर्म बहार वाले चश्में मुसलमानों के आने पर प्रतिबंध है।

अन्य स्थान :-

अतिरिक्त पुरातत्व स्थलों में शामिल हैं।

1. कर्णदा टैंक जहा बुद्ध स्थान लेते थें।
2. मनियार मठ जिसका इतिहास पहली शताब्दी का है।
3. मराका कुक्षी जहाँ अजन्मित अजातशत्रु काके पिता की मृत्यू का कारण बनने का श्राप मिला।
4. रणभूमि जहाँ भीम और जरासंध महाभारत की एक युद्ध लड़े थें।
5. स्वर्ण भण्डार गुफा ।
6. विश्वशांति स्तुप
7. एक पुराने दुर्ग के खण्डहर
8. 2500 साल पुरानी दीवारें।

बिम्बिसार कारागारः-

घाटी के बीच एक गोलाईदार ढाँचे के खण्डहर है जिसके हर कोन मे एक बुर्ज है। बिम्बिसार को उसके बेटे अजतशत्रु ने बन्दी बनाया था। इसके बावजुद वह गृधाकुट और बुद्ध को खिड़की से देख सकते थें।

- ✓ **राजगीर कैसे पहूँचें:-**
- ✓ **वायुमार्ग निकटतक हवाई - अड्डा पटना (107 किमी)**
- ✓ **रेलमार्ग पटना एवं दिल्ली से सीधी रेल सेवा ।**
- ✓ **सड़क द्वारा पटना , गया , दिल्ली एवं कोलकता से सीधा संपर्क ।**

बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम पटना स्थित अपने कार्यालय से नालंदा एवं राजगीर के लिए वातानुकूलित टूरीस्ट बस एवं टैक्सी सेवा भी उपलब्ध करवाता है। संपर्क टुरीस्ट भवन, बीरचंद पटेल पथ, पटना 800001 ।

बाहरी कड़ियाँ:-

_बिहार सरकार पर्यटन मंत्रालय के जालपृष्ठ पर राजगीर

राजगीर जैन, बौद्ध धर्मावलंबियों का तीर्थ।

गुमनामी मं खोयी बौद्ध धर्म की एक विरासत

यह लेख एक आधार है। आप इसे बढाकर ।

राजगीर पहाड़ियों से घिरी हरी-भरी एक घाटी में स्थित है। प्राचीन 'राजगृह' (अर्थात् राजा का निवास स्थान) या राजगीर पाँच पहाड़ियों तथा धीमी गति से बहने वाली बान गंगा नदी से घिरी हुई एक मनोरम शहर है। वर्तमान में यह भारत के बिहार प्रदेश की राजधानी 'पटना' से 60 कि०मी० की दूरी पर इसके दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित है, राजगीर अपने पत्थरों को काटकर बनाई गई गुफाओं, बौद्ध अवशेषों, लिपियों, हिन्दू एवं जैन मन्दिरों तथा मुस्लिम स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है, राजगृह के चारों तरफ स्थित पहाड़ियों एवं गुफाएँ, प्राचीनकाल के जड़वादी चार्वाक दार्शनिकों से लेकर आधिभौतिक उपनिषद् के दार्शनिक आचार्यों तक के आवास स्थल रही हैं। यह धर्म एवं बौद्धिक सक्रियता का एक केन्द्र स्थल था।

प्राचीनकाल में राजगीर बहुत से नामों से जाना जाता था जिनमें से वसुमती, बारहद्रथपुर, गिरिव्रज, कुशाग्रपुर एवं राजगृह उल्लेखनीय है।

'रामायण' में पाई जाने वाली नाम वसुमती है जिसका संबन्ध शायद पौराणिक राजा वसु से है जो ब्रह्मा के पुत्र कहलाए जाते हैं एवं पारंपरिक तौर पर उनको इस नगर का प्रतिष्ठाता भी माना जाता है। महाभारत एवं पुराणों में उल्लिखित इसका 'बारहद्रथपुर' नाम राजा वृहद्रथ की याद दिलाती है जो 'जरासंध' के पूर्वज थे। चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरा हुआ होने से इसका नाम 'गिरिव्रज' पड़ा जिसका अर्थ है पहाड़ों से घिरा हुआ। इसका चौथा नाम 'कुशाग्रपुर' का उल्लेख सातवीं सदी के दूसरे चरण में भारत में आए प्रसिद्ध चीनी तीर्थयात्री ह्वेन सांग के लेखों में तथा कुछ जैन एवं संस्कृत में लिखी बौद्ध पुस्तकों में पाया जाता है। ह्वेन सांग के अनुसार इसका अर्थ उत्तम श्रेणी के घासों का नगर है क्योंकि उस समय इसके आसपास खुशबुदार घास उगते थे परन्तु ऐसा लगता है कि इस जगह का नाम कुशाग्रपुर इसके राजा कुशाग्र के नाम पर पड़ा जो वृहद्रथ के बाद राजा बने थे। परन्तु इसका 'राजगृह' या राजाओं का निवास

स्थान नाम ही सर्वाधिक उपयुक्त है क्योंकि यह स्थल कई सदियों तक मगध की राजधानी थी। हालाँकि ह्वेन सांग के अनुसार यह नाम सिर्फ नया राजगृह जो पहाड़ियों से घिरा क्षेत्र है वहाँ के लिए ही लागू होता है।

रामायण में कहा गया है कि सृजनकर्त्ता ब्रह्मा का चौथा पुत्र वसु ने गिरिव्रज नगर की स्थापना की थी। बाद में कुरूक्षेत्र के युद्ध से पहले वृहद्रथ ने इस पर अपना कब्जा कर लिया था और अपने नाम पर वृहद्रथ वंश के शासन की स्थापना की थी। जरासंध जो उस समय अपनी शक्ति के लिए प्रसिद्ध था, इसी वंश का वंशज था। जरासंध ने कृष्ण के मामा और मथुरा के राजा कंस के साथ वैवाहिक संबन्ध जोड़ लिया था। जब श्रीकृष्ण ने कंस को उसके पापों की सजा देने के लिए मार डाला तब जरासंध अपने सेना के साथ मथुरा रवाना हो गया। इसके बाद श्रीकृष्ण के साथी ग्वालबालकों को मारकर सत्ता हथियाने की कोशिश की मगर उसे भगा दिया गया। इसके बाद श्रीकृष्ण पांडवों के साथ गिरिव्रज गए और श्रीकृष्ण के इशारे पर ही गदायुद्ध में जरासन्ध को हराकर भीमसेन

ने उसे मार डाला। हालांकि इसके बाद भी जरासन्ध के वंशज ही इस जगह पर राज्य करते रहे।

राजगृह बौद्धधर्म का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। सत्य को खोजनेवाले और भी दूसरे लोगों की तरह ही राजकुमार सिद्धार्थ (बुद्ध) ने भी संसार त्यागने के बाद मोक्ष प्राप्त करने की अभिलाषा से इसी नगर में आए। बुद्ध कई बार इस नगर में आए और अपने धर्म के प्रचार के लिए लम्बे समय तक यहाँ ठहरें।

वह इस नगर के कई स्थानों पर ठहरे लेकिन उनके लिए इस नगर का सबसे प्रियस्थल 'गृधकूट' अथवा गीद्ध का शिखर रहा। उन्होंने इस नगर और इसके वातावरण की सराहना की।

जब बुद्ध अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे उस समय यहाँ एक नए वंश का शासन देखने को मिलता है, इस वंश के राजा बिम्बिसार मगध

के सम्राट थे। वह उत्तराखंड के चार महान शक्तिशाली राजाओं में से एक थे, अन्य तीन कोसल के प्रसेनजीत, वत्स के उदयन एवं अवन्ति के प्रद्योत थे। यद्यपि बिम्बिसार का वंश उतना ऊँचा नहीं था फिर भी अपने पौरूष और राज्य के विस्तार में वह बाकी तीनों के बराबर था। उसने मगध की विजययात्रा अनेकों राज्यों पर स्थापित की। उसके अधीन वीर सेनानियों के जत्थे की कूच अशोक के शासनकाल में जाकर रूकी जब मगध भारत और अफगानिस्तान तक फैले साम्राज्य का केन्द्र बना।

बिम्बिसार बुद्ध तथा बौद्ध धर्म के प्रति परमश्रद्धालू था। कहा जाता है कि उनके बुढ़ापे में उनके पुत्र अजातशत्रु ने उन्हें बन्दी बना लिया एवं उनकी हत्या कर दी एवं बाद में उसने भी बुद्ध की शरण ली और बौद्ध धर्म को अपना लिया।

पाँचवी सदी में भारत की यात्रा करने वाले चीनी तीर्थयात्री फा-हियेन के अनुसार पहाड़ियों के बाहरी हिस्से में नया राजगृह नगर का निर्माण अजातशत्रु ने ही किया था। ह्वेन स्वांग ने भी कुछ हद तक इसका समर्थन किया है। पाली भाषा में लिखी पुस्तकों में कहा गया है कि उसने नगर की किलेबन्दी की मरम्मत कराई थी क्योंकि उसे अवन्ति के राजा प्रद्योत द्वारा आक्रमण की आशंका थी। बाद के पाली विद्वानों में से एक बुद्धघोष ने कहा है कि नगर भीतरी और बाहरी इन दो हिस्सों में बँटा था। नगर के चारों तरफ 32 बड़े द्वार तथा 64 छोटे द्वार थे। इस जगह की जनसंख्या 18 करोड़ बताई गई है जो नगर के बाहरी एवं भीतरी हिस्से में बराबर की संख्या में बँटी थी - यह स्पष्टत: अतिशयोक्ति है।

बुद्ध की मृत्यु के बाद अजातशत्रु उनके अवशेषों में से अपने हिस्से को लाकर उस पर एक स्तूप का निर्माण किया। कुछ महीनो के उपरान्त जब अग्रणी बौद्ध भिक्षुओं ने बुद्ध के उपदेशों की शिक्षा देने के उद्देश्य से एक मंडली बनाने के लिए एक सभा बुलाई तब अजातशत्रु ने इस मकसद के लिए सप्तपर्णी गुफा के सामने निर्मित एक खास विशाल हॉल में उन लोगों के ठहरने का प्रबन्ध किया।

अजातशत्रु के वारिस उदयिन् ने अपनी राजधानी राजगृह से हटाकर पाटलिपुत्र में स्थापित की संभवत: यहाँ से बहती नदी द्वारा संचार व्यवस्था की सुविधा को ध्यान में रखकर ऐसा किया गया था। इस समय से ही राजगृह की महत्ता घटने लगी थी हालाँकि पुराणों में कहा गया है कि यह शिशुनाग द्वारा एक बार फिर मगध की राजधानी बनाई गई थी। बाद के राजाओं ने पाटलिपुत्र को ही अपनी राजधानी बनाई। परन्तु अशोक द्वारा इस स्थान पर एक स्तूप और एक स्तम्भ का निर्माण इस बात को सिद्ध करता है कि ईसा पूर्व तीसरी सदी में भी इस स्थान का महत्व बिल्कुल खत्म नहीं हुआ था।

राजगीर सिर्फ बुद्ध के प्रियस्थान के रूप में, एवं उनके जीवन की विभिन्न घटनाओं से संबन्धित होने के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है बल्कि जैन धर्मावलम्बियों ने भी समानरूप से इसका समादर किया है। जैनग्रन्थों में कहा गया है कि उनके अन्तिम जीन महावीर ने अपने 32 वर्ष के सन्यासी जीवन की 14 वर्ष का मौसम इसी राजगीर एवं नालन्दा में बिताया है। राजगृह के अनेक धनी व्यक्ति उनके समर्थक रहे हैं, मजे की बात यह है, जैनों ने भी बिम्बिसार एवं अजातशत्रु (उनके धर्मग्रन्थों में श्रेणिक और कुनीक नाम से उल्लिखित) को अपने धर्म के समर्थक के रूप में दावा किया है। राजगृह में ही बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रत नाथ का जन्म हुआ था। यहाँ के विपुलाचल नामक पहाडी पर ही महावीर ने अपने पहला उपदेश दिया था। 72 फीट ऊँचा समोशरण मन्दिर इस पवित्र घटना के संस्मरण में बना है। महावीर के 11 प्रमुख शिष्य या गणधर में से सबकी मृत्यु राजगृह के किसी न किसी पहाड़ के शिखर पर हुई है। माना जाता है अशोक (ईसापूर्व तीसरी सदीं) की मृत्यु भी इन्हीं पहाड़ों की किसी चोटी पर हुई थी एवं यहाँ उसका स्तूप भी बना हुआ है।

जैन एवं बौद्ध साहित्यों में राजगीर को घनी आबादी वाला समृद्ध और मनोरम नगर के रूप में वर्णन किया गया है। बुद्ध के शिष्य आनन्द के अनुसार यह जगह उसके प्रभु के महापरिनिर्वाण के लिए उपयुक्त स्थान है। इन साहित्यों में भगवान बुद्ध एवं महावीर जैन के जीवन की असंख्य घटनाओं से इस जगह की भिन्न-भिन्न स्थलों को जोड़ा गया है लेकिन उनमें से अधिकतर जगहों को सन्तोषजनक रूप से पहचानना मुश्किल है। बौद्धमठ जैसी संस्थाओं की धारणा का जन्म राजगीर में ही हुआ जो आगे चलकर शानदार शैक्षणिक एवं धार्मिक केन्द्रों में विकसित हुई और कई अनुशासित एवं विद्वान सन्यासियों को उत्पन्न किया। राजगीर में ही भगवान बुद्ध ने अपने सन्यासियों को गीत गाने एवं सुनने के लिए मना किया, नहाने के समय उन्हें अपने शरीर मलने, बाल बढ़ाने गले या कमर में किसी प्रकार का धागा पहनने या बाँधने की भी मनाही थी उन्हें किसी प्रकार के चमत्कार प्रदर्शन करने से भी मना कर दिया गया था। इस जगह की वर्तमान धार्मिक महत्व का कारण खाश कर जैनों से सम्बन्ध है जिन्होंने उच्चता से अपने लगाव के कारण लगभग हर पहाड़ की चोटी पर एक-एक मन्दिर बना दिया है। हालाँकि ये अपने प्राचीनता के बारे में दावा नहीं करते मगर भारत के दूर-दूर के क्षेत्रों से तीर्थयात्री इनके दर्शन के लिए आते हैं।

राजगीर को चारों तरफ से घिरकर रखने वाले पहाड़ों की संख्या 5 हैं। इनके नाम अलग-अलग पुस्तकों में अलग-अलग हैं, उदाहरण के लिए महाभारत में इनके नाम हैं, वैभर, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि, एवं चैत्यक हालाँकि इसी ग्रन्थ के दूसरे जगह पर इनके नाम इस प्रकार हैं, पंडार, विपुल, वराहक, चैत्यक एवं मातंग। पाली ग्रन्थों में इसके नाम कुछ और ही है। वैभर, पांडव, वैपुल्य, गृधकूट एवं राशीगिरि। वर्तमान में इनके नाम हैं, वैभर, विपुल, रत्न, शैल, उदय एवं सोना इनकी उत्पत्ति जैनों से हुई है।

1. परिचय

1. **नालन्दा, समृद्ध नगर** - मगध की राजधानी राजगृह से एक योजन उत्तर-पश्चिम नालंदा नामक एक 'समृद्ध, तथा बहुजनाकीर्ण' नगर था। इस नगर का महाधनी वैभवपूर्ण सेठ 'लेप' भगवान् बुद्ध का शिष्य था। पालि ग्रंथों से पता चलता है कि इसी नगर का एक प्रमुख व्यापारी उपालि, जो पहले श्रमण निर्गन्ध नातपुत्र का शिष्य था, बुद्ध के पास शिक्षा ग्रहण कर उनका शिष्य हो गया था।

पालि अर्थकथाचार्य बुद्धघोष ने नालन्दा शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए बताया है कि 'नालं ददाती' ति नालंदा' अथवा 'न अलं ददाती' ति नालन्दा' अर्थात्, 'जहाँ कमल के नाल पाये जायँ' अथवा 'वह जो प्रचुर दे सके। यह आज तक भी सत्य है कि इसके आस-पास बड़ी-बड़ी रम्य पुष्करणियाँ हैं जो कमल के नाल से भरी हैं। और उस समय की 'समृद्ध-सम्पन्न' नालंदा में प्रचुर सामग्रियाँ रही ही होंगी। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग जब यहाँ आया था तब यहाँ के लोग एक तालाब में 'नालंदा' नामक एक नाग के निवास के कारण इस स्थान का यह नाम होना मानते थे।

'अयं नालंदा इद्ध चेव फीता च बहुजना आकिरणमनुस्सा' ति'

बुद्ध (मुज्झिम निकाय-सु॰ 56)

2. **सारिपुत्र का जन्म-स्थान** - भगवान बुद्ध के प्रधान शिष्य उपतिस्स सारिपुत्र का जन्म नालंदा के पास ही 'नालक' ग्राम में हुआ था। इसी कारण बुद्ध काल से ही नालंदा एक आकर्षण का स्थान रहा। जब सारिपुत्र का अन्तिम समय निकट आया, तब 'नालक' ग्राम आकर उन्होंने अपनी माँ को धर्मोपदेश दिया, और उसी कोठरी में निर्वाण प्राप्त किया जिसमें उनका जन्म हुआ था। तब से बौद्ध श्रद्धालु श्रमण एवं उपासकों के लिये यह एक प्रमुख तीर्थ हो गया।

सारिपुत्र का व्यक्तित्व बड़ा ऊँचा था। बुद्ध ने स्वयं कहा,

'एतदग्गं भिक्खवे पञ्ञावन्तानं यदिद सारिपुत्तो'-अर्थात्, 'भिक्षुओ, सभी प्रज्ञावानों में यही अग्र है जो यह सारिपुत्र। और यह भी कि 'सारिपुत्तेन गतदिसायं मय्हं गमनं नत्थि' - अर्थात: 'जिस दिशा में सारिपुत्र एक बार गये उस दिशा में मेरे जाने की आवश्यकता नहीं है। अत: बौद्ध-शासन में आज भी भगवान् बुद्ध के बाद यदि किसी की सबसे अधिक पूजा होती है तो वह सारिपुत्र की। ऐसे महापुरुष के जन्म और निर्वाण का एक स्थान पर होना अत्यन्त श्रद्धा का विषय हुआ। इसी जगह सारिपुत्र की स्मृति में एक प्रमुख चैत्य का निर्माण हुआ। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यह उल्लेख किया है कि मगध के पाँच सौ व्यापारियों ने दस कोटि स्वर्ण मुद्राओं का दान कर एक विस्तृत भूमि यहाँ खरीदी थी। तिब्वती इतिहासकार तारानाथ ने लिखा है कि सम्राट अशोक ने भी यहाँ आकर सारिपुत्र के चैत्य की पूजा की थी, और वहाँ उनके लिए एक सुंदर मंदिर का भी निर्माण कर दिया।

इस तरह 'प्रज्ञा के प्रतीक' उपतिस्स सारिपुत्र के जन्म और निर्वाण से पुनीत नालंदा, मगध के सम्राट और जनता से पूजित नालंदा, 'प्रज्ञा' के केन्द्र के रूप में तब से विकास की ओर अग्रसर हुई।

2. नालन्दा विश्वविद्यालय

1. **भवन-निर्माण** - सारिपुत्र चैत्य के इर्द-गिर्द जो भिक्षु विहार बने वे क्रमश: विद्या के केंद्र हो गये। देश के सुदूर प्रान्तों से भी विद्यार्थी यहाँ आकर शिक्षा प्राप्त करने लगे। विद्यार्थियों के बाहुल्य के कारण स्थान व्यवस्था आदि का अभाव हुआ। इसकी पूर्ति समय-समय पर देश के श्रद्धालु राजाओं ने मुक्तहस्त से की। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने

शक्रादित्य, बुद्धगुप्त, तथागतगुप्त, बालादित्य, वज्र और 'मध्यदेशीय' (हर्ष?) - इन 6 राजाओं द्वारा नालंदा में भवन-निर्माण का उल्लेख किया है। इसी प्रकार दूसरे चीनी यात्री इत्सिंग ने, जो ह्वेनसांग के चालीस वर्ष बाद भारत आया था, नालंदा में राजाओं द्वारा निर्मित 8 भव्य विहारों को देखा था।

नालंदा के पोषक श्री धर्मपाल, श्री देवपाल देव आदि पाल वंशीय राजाओं ने तो नालंदा के निर्माण में अपना सारा वैभव लगा दिया। ये भवन ऐसे थे कि 'यहाँ की विहारावली की शिखर श्रेणियाँ अम्बुधरों' को स्पर्श करती थी। विहारों की पंक्तियाँ मनोज्ञ तथा नानारत्नमयूर जालखचित मानो 'ब्रह्मा' द्वारा निर्मित की गई हों।' (यशोवर्मदेव शिलालेख'-8वीं शदी?। इसी प्रकार चीनी यात्री ह्वेवसांग ने नालंदा के भवनों का वर्नन करते हुए

लिखा है 'इन महाविहारों' के गगनचुम्बी सौध पर बैठकर मेघ के बदलते रूपों को देखकर कोई भी आनंद ले सकता है।

आज भी खण्डहर की दीवालों की मोटाई - 6'-12' फीट इस बात को प्रमाणित करती हैं कि इनके आधार पर बने हुए भवन सचमुच ऐसे विशाल रहे होंगें। चौड़ी और पक्की सीढ़ियों के भग्नावशेष भी यही प्रमाणित करते हैं कि उतनी ऊँचाई तक पहुँचने के लिये ही इनका निर्माण हुआ था।

महाविहारों की पंक्ति से लगी हुई ही चैत्य और स्तूपों की पंक्ति थी जिसका वर्णन ह्वेन सांग ने बड़ा सुंदर किया है। ब्राह्मण श्रद्धालु श्री सुविष्णु ने हीनयान और महायान के उत्थान के निमित्त 108 मंदिर बनवाये, जिनमें शाक्यसिंह तथा अन्य अनेक देवताओं की प्रतिमाओं की स्थापना की थी। सम्राट अशोक के अन्तिम वंशज पूर्णवर्मा द्वारा बनवाई गई 80 फीट ऊँची ताँबे की एक बुद्धप्रतिमा ह्वेनसांग ने अपनी आँखों देखी थी। यही नहीं, भारत के पड़ोसी राष्ट्रों ने भी नालन्दा के निर्माण में हाथ बटाया था। सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) के राजा बालपुत्र देव ने नालन्दा में एक महाविहार बनवाया था, जिसका उल्लेख देवपाल के ताम्रलेख से ज्ञात है।

स्तूपा और विश्वविद्यालय के खण्डहर

विश्वविद्यालय के चारो ओर ऊँचा प्राचीर था। संघारामो के मध्यभाग के पास ही विश्वविद्यालय का प्रमुख द्वार था। इसमें प्रवेश करते ही जिस दृश्य को ह्वेनसांग ने देखा था उसका सुंदर वर्णन उसने किया है।

2. आर्थिक - विश्वविद्यालय के महाविहारों के अनुरूप ही उनके पोषण के लिये आर्थिक व्यवस्था की गई थी। राज्य की ओर से विश्वविद्यालय के लिये 100 गाँवों की आय दे दी गई थी, ऐसा ह्वेनसांग के लेख से विदित होता है। इस प्रकार की राज्य सहायता बढ़ती ही गई। दूसरे चीनी यात्री इत्सिग (672 ई०) ने, जो यहाँ दस वर्षों तक विद्याध्ययन करता रहा, विश्व-विद्यालय के लिये 200 ग्रामों की आय का प्राप्त होना लिखा है। इन गाँवों से पर्याप्त मात्रा में चावल, मक्खन, दूध आदि खाद्य पदार्थ मिलते थे।

इतनी आर्थिक व्यवस्था होने पर भी यशोवर्म देव (कन्नौज, आठवीं शदी?) के मंत्री मालाद ने नालंदा के भिक्षुओं के नित्य भोजनादि की व्यवस्था के लिये इतना धन दान दिया था कि 'जिससे पूरा संघाराम खरीदा जा सकता था। (नालंदा से प्राप्त यशोवर्मदेव का लेख) सुमात्रा के राजा बालपुत्र देव ने जो महाविहार बनवाया था उसके संचालन और पोषण के लिये उसने अपने मंत्री को यहाँ के तत्कालीन राजा देवपालदेव के यहाँ भेजकर राजगृह विपयक पाँच गाँव के दान की व्यवस्था की थी।

इतने भव्य भवन में रह ऐसी पुष्ट और उदार आर्थिक व्यवस्था से निश्चिन्त हो नालंदा के आचार्य और विद्यार्थी विद्याभ्यास में संल्लग्न रहते थे।

नालन्दा के खण्डहर

1. **परिचय** – प्राय: सात ही शताब्दियों की घोर समाधि के बाद नालन्दा की समाधि खुलने लगी। 19वीं शदी के प्रारम्भ में ही पाश्चात्य पुरातत्वविद् बुचनान हेमिल्टन **(Buchenon Hamilton)** का ध्यान नालंदा की ओर आकृष्ट हुआ। उसने राजगृह से सात मील उत्तर-पश्चिम बड़गाँव नामक धाम में अनेक बौद्ध मूर्तियों का संग्रह किया। उसके बाद प्रसिद्ध पुरातत्वज्ञ जेनरल कनिंघम ने 1860 ई॰ में चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरण का अनुकरण कर प्राप्त मूर्तियों एवं शिलालेखों के आधार पर बड़गाँव को ही नालंदा का स्थान बताया। उसी ने नालंदा की खुदाई का सूत्रपात किया। जेनरल कनिंघम के बाद इतिहासज्ञ ब्राँडले साहेब की देख रेख में खुदाई का कार्य जारी रहा। भारतीय पुरातत्व विभाग ने नालंदा की ओर विशेष ध्यान दिया। 1915-16 से खुदाई लगातार होती

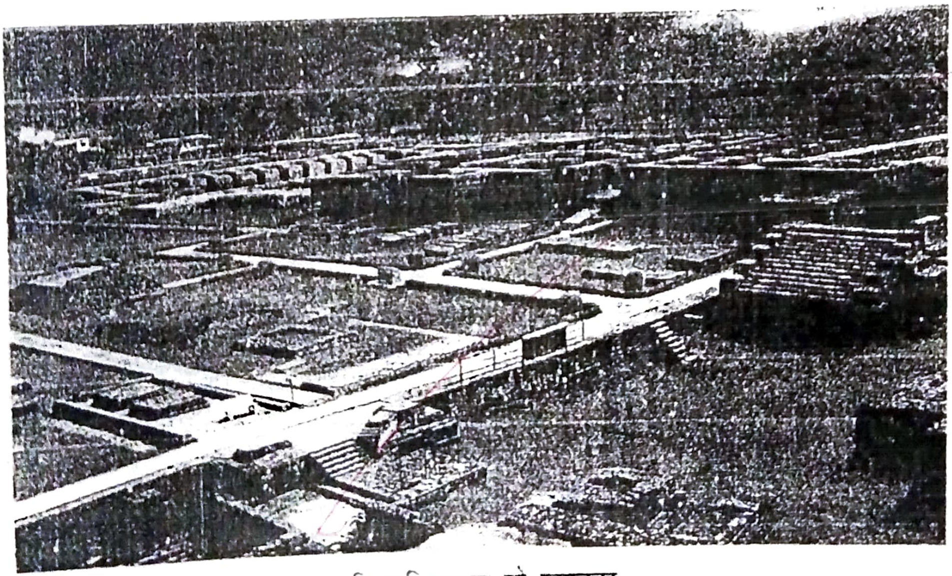

विश्वविद्यालय के खण्डहर

रही। फलस्वरूप नालंदा का गौरव फिर भी एक बार संसार को प्रकट हुआ। आज प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में देश-विदेश के यात्री आकर नालंदा के खण्डहरों का दर्शन करते हैं और भारत की सांस्कृतिक महत्ता का अनुमान कर पाते हैं।